PRACHIN NADI JYOTISH

BY:- Shree Pavan Sharma

❖ एक प्रश्न

❖ आप एक अंधेरे कमरे में प्रवेश कर रहे हैं, आपने कमरे में प्रकाश के लिए एक टोर्च जलाई । टोर्च का प्रकाश कमरे के कुछ हिस्सों को ही प्रकाशमान करेगा अथवा इसका प्रभाव सम्पूर्ण कमरे में होगा ?

❖ 2 स्थितियों का चित्रण कर रहा हूँ उनको समझें।

❖ आप अपने घर से अपने मित्र से मिलने अपनी गाडी में निकले। इस मित्र का घर आपके घर से 50 कि मी की दूरी पर है।

❖ घर से निकले गाडी स्टार्ट की AC. चालू किया और निकल पड़े। रोड पर आते ही सामने जाम !!

जैसे तैसे जाम से निकले तो लाल बत्ती पर दोनों तरफ मोटरसाइकिल का झुण्ड और एक ने तो आपकी नयी नवेली गाडी पर रगड़ भी मार दी। आपको क्रोध हुआ मगर ये सोचकर आगे बढ़ चले की insurance से claim ले लेंगे। आगे पुलिस ने रोक कर एक 500/- का चालान चिपका दिया आपको।

आगे से आपको 2 किलीमीटर का डायवर्सन लेना पड़ा क्योंकि रोड पर काम चल रहा था। और आगे चले तो एक वी आई पी महोदय के कारण 20 मिनट तक ट्रैफिक रुका दिखाई दिया। आपकी क्या हालात होगी मित्र के घर पहुँचने पर? और कहीं गाडी का तेल खत्म हो गया हो और आपको गाडी को धक्का लगाना पड़ जाये 1 km तक, तब ?

2. आप घर से निकले और सीढ़ी सपाट मस्त रोड। हलके हलके बादल आसमान में। गाडी चले जा रही है मस्ती से रोड पर। कहीं लाल बत्ती पर गाडी रुकी, और ये क्या आपका बचपन का मित्र अपनी गाडी में नज़र आया। वो भी आपकी गाडी में आकर बैठ गया और दोनों गपशप करते रहे और बीच में गाडी रोक कर आप दोनों ने साथ साथ कोल्ड ड्रिंक पीयी। और साथ साथ उस मित्र के घर भी पहुँच गए।

- मेरा प्रश्न आपसे ये है की दोनों स्थितियों में आप स्वयं में क्या अंतर महसूस करेंगे?

नाड़ी ज्योतिष का सम्पूर्ण आधार मेरी उपरोक्त दो कमेंट पोस्ट पर आधारित है । दिन में इनपर चिंतन करें । अपने उत्तर *चर्चा ग्रुप* में लिखें ।

- अब मान लीजिए वो टोर्च एक ग्रह है और कक्ष कुंडली है जिसमे 12 भाव हैं ।

ग्रह का अधिक प्रभाव उसकी स्थिति से अधिकतम होगा क्योंकि लाइट एक स्ट्रैट लाइन में ट्रेवल करती है ।

- आगे बढ़ूँ उसके पहले आप सब से एक आग्रह करूँगा की जो आपने पाराशरी / वैदिक में पढ़ा है उसको अपने दिमाग में एक कोने में बंद कर दें । कुछ दिन जो मैं बताऊंगा उस पर मनन करें । एक बात को मानकर चलें कि जो भी सामग्री / ज्ञान उपलब्ध है उसका कालांतर में क्षय हुआ है ।जिसके कारण विद्या में कुछ प्रश्नवाचक चिंन्ह आ गए

हैं । आप 6 महीने बाद काफी विद्या ग्रहण कर चुके होंगे और आपके कई प्रश्नों के उत्तर आपको स्वतः मिलेंगे

❖ ग्रह का प्रभाव सम्पूर्ण 12 भावों पर पड़ता है , इस बात को याद रखें । किस भाव पर कितना प्रभाव किस भाव पर पड़ेगा वो आपको इसी सप्ताह में स्पष्ट हो जाएगा ।*

❖ अब मित्र के घर की यात्रा का प्रश्न लेते हैं ।

पहले उदाहरण में जातक को कठिनाई हुई और दूसरे चित्रण में उसको हर्ष हुआ यात्रा सहज हो गयी ।

हम कई कुंडलियों में अनुभव कर चुके हैं कि जातक की कुंडली में उच्च का ग्रह है, स्वक्षेत्री ग्रह है, मित्र राशी में स्थित है । उपलब्ध विद्या के अनुसार उसको शुभ फल देना चाहिए मगर वो विपरीत परिणाम देता है । इसका क्या कारण है ?

❖ फिर ग्रह के बलाबल को देखेने के लिए कई वर्ग कुंडलियों का अध्ययन आरम्भ होता है और षड्बल आदि का अध्ययन आरम्भ होता है जो मष्तिष्क में भूचाल उत्पन्न कर देता है और जो निष्कर्ष निकलता है वो सभी कुंडलियों पर लागू भी नहीं होता । इस गाड़ी से हटकर एक और उदाहरण लेते हैं । आपके घर के आसपास सब खाली है । सपाट मैदान । आप स्वयं को कितना सुरक्षित महसूस करेंगे । *विपरीत स्थिति में आप कैसा महसूस करेंगे ?

- उत्तर होगा असहाय !

- अब इसी स्थिति में आपके आसपड़ोस में काफी घर हैं और सभी पड़ोसी आपके मित्र - बन्धु रहते हैं । विपदा आने पर पड़ोसी / मित्र सहायता के लिए ततपर हैं तो आपका साहस भी बना रहता है ।
- ग्रह भी इसीप्रकार व्यवहार करते हैं । भले ही वो स्वग्रही अथवा मित्र ग्रही हो मगर पीछे के 4-5 खाली भावों से चलकर आने से उसके बल की क्षति होती है ।
- अगर पीछे शत्रु ग्रहों से द्वंद करता हुआ जन्म समय में उक्त भाव / राशि में आके बैठा हो तो उसको आप कमज़ोर ही माने ।
- और अगर पीछे से मित्र ग्रहों से प्रोग्रेस करके उक्त स्थान पर बैठा है तो उसमें अधिक बल होगा ।
- नाड़ी में ग्रह के बलाबल का आंकलन उसके स्थित भाव से पीछे के 4-5 भावों का विश्लेषण ज़रूरी है । इसीप्रकार ग्रह क्या देगा भविष्य में उसके लिए उसके आगे के भावों का ज्ञान आवश्यक होगा ।
- ये दो पॉइंट नाड़ी ज्योतिष का मूलाधार है । इसपर सभी गम्भीर मनन करें । नाड़ी का सरलार्थ हम *सूक्ष्म* कह सकते हैं । नाड़ी की अनेक पद्दतियों का वर्णन ज्योतिष में देखेने में आया है।

जैसे...

- सूर्य नाड़ी
- चंद्र नाड़ी
- कुजा नाड़ी

- बुध नाड़ी
- गुरु नाड़ी
- शुक्र नाड़ी
- शनि नाड़ी
- लग्न नाड़ी
- लगनाधीपति नाड़ी
- सर्व नाड़ी
- योग नाड़ी
- भृगु नाड़ी
- नंदी नाड़ी
- ध्रुब नाड़ी
- सत्य नाड़ी
- अगस्त्य नाड़ी
- चंद्र कला नाड़ी
- सप्त ऋषि नाड़ी
- कुमार नाड़ी
- नव नाड़ी
- काक भुजान्दर नाड़ी
- कपिला नाड़ी
- भार्गव नाड़ी

- ईश्वर नाड़ी....

- हमलोग आर जी राव के विषय भृगु नंदी का अध्ययन करेंगे । ज्योतिष का सम्पूर्ण ज्ञान तो शिव के अलावा किसी को भी नहीं है । मुझे जितना आता है वो सब आपलोगों के समक्ष प्रस्तुत करूँगा । और आप सभी के साथ साथ स्वयं भी कुछ और नया सीखूंगा । आज यहीं विराम देते हैं । कोई प्रश्न हो तो पूछें ।
- एक लघु उदाहरण और प्रस्तुत कर रहा हूँ ।
- आप एक रेगिस्तान के एक क्षोर पर खड़े हैं । रेगिस्तान करीब 100 किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है । आपको उसे पार करके अपने गंतव्य पर पहुंचना है । आपके पास न तो छतरी है और ना ही पीने को जल । रेगिस्तान का तापमान 50 डिग्री का है । कोई संगी साथी भी नही है । अपने गंतव्य तक पहुंचने तक आपकी क्या स्थिति होगी ?
- उत्तर समझने के लिए वैज्ञानिक होने की आवश्यकता नहीं हैं । थोड़ी सी ही जान बाकी रहेगी
- अब इसी उदाहरण को ग्रहों से समझें । अगर कोई ग्रह अपने स्थित भाव तक पहुंचने के लिए पीछे के 4 -5 रिक्त भावों से गोचर करके आये तो उसमें कोई शक्ति नही होती हैं । फिर चाहे तो अपनी उच्च राशि में स्थित हो, मित्र क्षेत्री हो अथवा स्वक्षेत्री हो ।
- नाड़ी ज्योतिष में कई पद्दतियां अनुभव में आई है । हम भृगु नन्दी नाड़ी का अध्ययन करेंगे । इस पद्दति में त्रिकोण स्थित भावों का

अधिक महत्व दृष्टिगोचर होता है । कहीं कहीं त्रिकोण भावों को विष्णु भाव भी कहा गया है ।

❖ हम इसको विष्णु भाव से संबोधित कर सकते हैं ।*

❖ नाड़ी ज्योतिषी *लग्न* को महत्व नही देते मगर लग्न का प्रयोग आर जी राव ने कहीं कहीं किया है और लग्न के प्रयोग से फलादेश भी सटीक रहे हैं । हम आरंभिक विद्या के पश्चात कुंडली विवेचन के समय लग्न का प्रयोग करेंगे ।

❖ नाड़ी ज्योतिष के चार मुख्य बिंदु हैं

1 दिशा ।

2 त्रिकोण अथवा विष्णु भाव।*

3 ग्रह गोचर ।*

4 किसी भी ग्रह के 2-12, 3-11, 5-9 एवं 7 भाव में स्थित ग्रह ।

❖ उपरोक्त दो पॉइंट को चित्र रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ । याद करने में सहज रहेगा ।

राशियों का दिशा ज्ञान

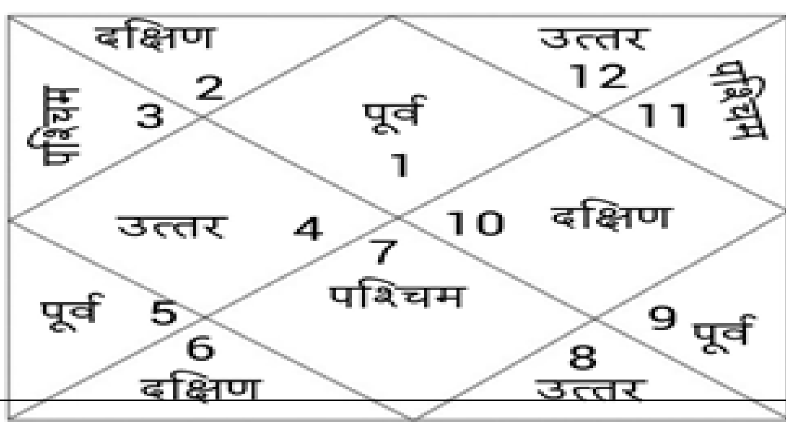

Pavan Sharma

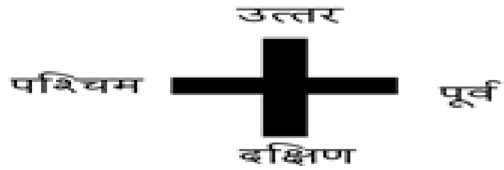

अभ्यास करते समय आप इस प्रकार से क्रॉस बनाकर ग्रहों को दिशा के अनुसार लिख सकते हैं।

आप सबने पढ़ा होगा अग्नि प्रधान राशियां त्रिकोण स्थित हैं । *मेष सिंह एवं धनु* ये तीनो राशियां पूर्व दिशा को रिप्रेजेंट करती हैं

दूसरा पॉइंट त्रिकोण / विष्णु भाव । चित्र से स्वतः स्पष्ट हो जाएगा।

विष्णु भाव

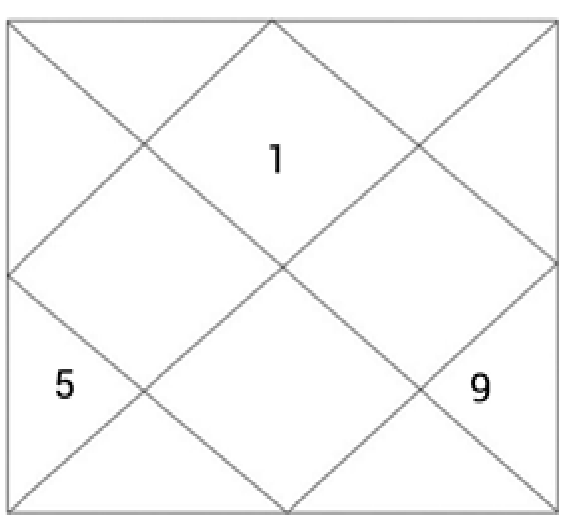

❖ धर्म त्रिकोण

विष्णु भाव

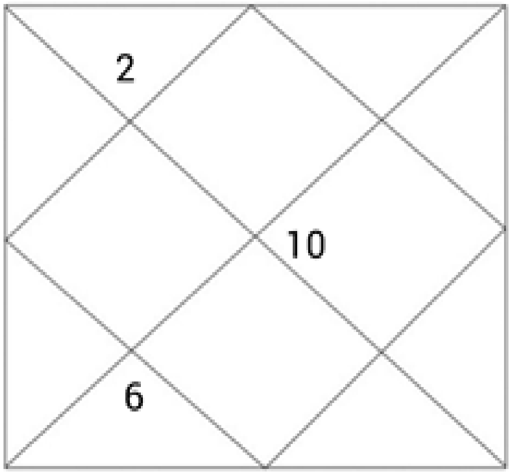

❖ अर्थत्रिकोण

विष्णु भाव

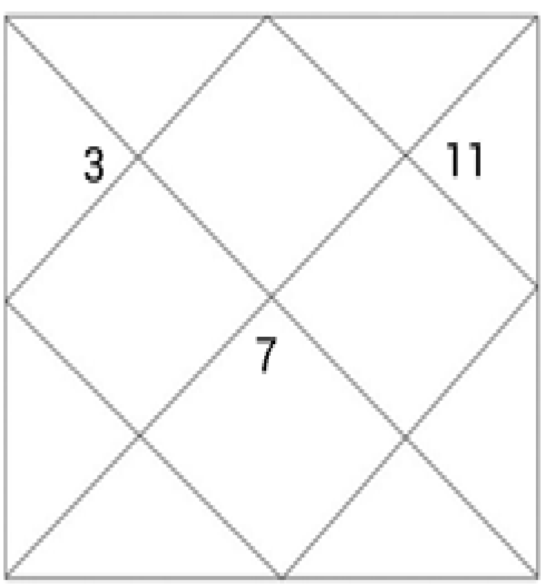

❖ काम त्रिकोण

BY:- Shree Pavan Sharma

विष्णु भाव

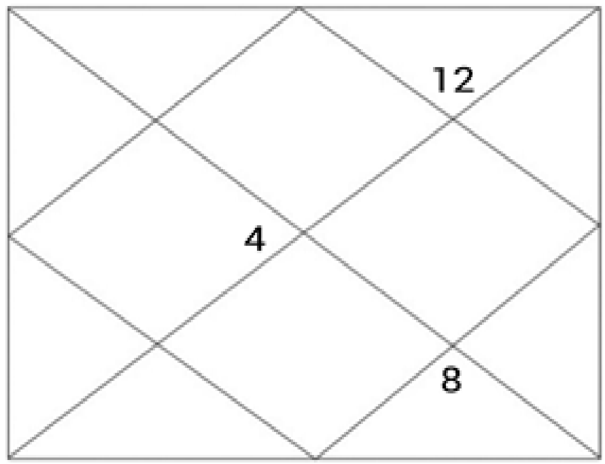

❖ मॉक्ष त्रिकोण

3 *ग्रह गोचर*

❖ नाड़ी में हम दशाओं का प्रयोग नही करेंगे, हम ग्रह गोचर का प्रयोग करेंगे । एलिमेंट्री कोर्स के बाद ग्रह- नक्षत्र गोचर का भी प्रयोग करेंगे । आपसे अनुरोध है इसको ध्यान से पढ़े ओर समझे । नाड़ी ज्योतिष कई पद्धतियों मे पाई जाती है।

❖ हम जिस पद्धिति का वर्णन कर रहे है। इसे विष्णु भाव पद्धिति कहते है । कई प्रचलित पद्त्तियों की पुस्तकों मे कहा गया है की नाड़ी पद्धितीओं मे लग्न की आवश्यकता नही है, मगर आर जी राव की पुस्तकों में इसका संकेत मिलता है ।

➢ इस पद्धिति मे 4 मुख्य तथ्य है।

1। विष्णु भाव

2। ग्रह का गोचर

3। किसी भाव के 2, 3, 11, 12 एवम् 7 मे स्थित ग्रह।

4 । दिशा (Direction)

1 उदाहरण के लिए मेष लग्न को ले।

- त्रिकोण भाव 1,5एवम् 9 राशी हुई। ये तीनो है अग्नि तत्व है। तीनो है पूर्व दिशा है। तीनो के नक्षत्र लॉर्ड एक ही है। तीनो के नवांश एक है। तीनो राशियों के लॉर्ड आपस मे परम मित्र है। इसी प्रकार बहुत गुण एक ही पाये जाते है । इसलिए इन्हें विष्णु भाव कहा जाता है।
- ठीक इसी प्रकार वृष, मिथुन एवम् कर्क लग्न को ले तो भी ये ही गुण पाये जाते है। फिर इसी प्रकार किसी भी लग्न को ले तो उपरोक्त समानता पाई जाती है।इसलिए इन्हें विष्णु भाव कहा जाता है।

2 गोचर -नाडी मे इसे समझना अति आवश्यक है। जन्म समय की कुंडली मे जो ग्रह जिस भाव मे   होता है उस ग्रह को स्थिर ग्रह माना जाता है। जिसे नेटल या पेदायशी ग्रह भी कहते है। परन्तु वास्तव में ग्रह स्थिर नही होते। वे तो पूर्व से दक्षिण, पश्चिम फिर उत्तर की तरफ गोचर करते है। जन्मकालिक ग्रह जहाँ होते है उंससे पीछे के गोचर से पूर्व जन्म के मिलने वाले गुणों का एवम् आगे के गोचर से भविष्य का अनुमान लगाते है।

3. किसी भाव के 2,3,11,12 एवम् 7 मे स्थित ग्रह उस भाव या उसमे स्थित ग्रह पर पूर्ण प्रभाव रखते है। पाराशरी पद्धिति मे इनसे पाप कतरी , शुभ कतरी, वेशी या वोशि आदि योग बनते है। ये योग नाडी मे भी बनते है।परन्तु कही कही फलित देने मे मामूली फर्क होता है । उदहारण के लिए, सूर्य एक भाव मे हो तो सूर्य से 12 एवं 2 भाव के ग्रह भी

अस्त होते है। दूसरे सूर्य के 12 एवं 2 मे शत्रु एवम् पापी ग्रह हो तो भयंकर पाप कर्तरी योग बनता है।अगर शुभ ग्रह हो तो शुभ योग बनता है। अगर एक शत्रु पापी एवं एक मित्र पापी हो तो मध्यम पाप कर्तरी योग निर्मित होता है। ठीक इसी प्रकार मध्यम शुभ कर्तरी योग बनता है।

- ❖ अत 2,3,11,12 एवम् 7 भाव मे स्थित ग्रह का प्रभाव, जिस भाव या ग्रह का अध्ययन कर रहे है उस पर भी देखा जाता है।

4. दिशा (Direction) इसे समझना अति आवश्यक है।।।

- ❖ जब विष्णु भाव राशिओ की दिशा एक ही तो विष्णु भाव मे स्थित ग्रह एक ही राशि या एक ही भाव मे एकत्रित माने जायेंगे। इसके कारण विष्णु भाव नाड़ी मे 5 , 7 ओर 9 दृस्टि पूर्ण दृस्टि मानी गई हैं। विष्णु भाव मे स्थित ग्रह त्रिकोण मे कही भी स्थित/ बैठे माने जायेगे। परन्तु ग्रह का प्रभाव राशि , भाव, उसके अपने बल अनुसार होगा ।
- ❖ उसका आचरण जिस भाव मे बैठा है जिन ग्रहो का साथ बैठा है ।उनके अनुसार होगा।

किसी भी भाव से 11वे भाव मे बेठे ग्रह उस भाव या उसमे बैठे ग्रह या युति को लाभ देते है । जिसका अध्ययन किया जा रहा है। इसी प्रकार तृतीय भाव मे बैठे ग्रह लग्न एवं लग्न मे बैठे ग्रह को अपनी मित्रता एवम् शत्रुता के अनुसार फल देंगे। अगर लग्न मे बैठे ग्रह

तृतीय भाव मे बैठे ग्रह का मित्र है तो लाभ एवं शत्रु है तो हानि । यहाॅ नैसर्गिक एवम् तात्कालिक मैत्री देखना आवश्यक रहेगा ।

ठीक इसीप्रकार का व्यवहार 6 एवं 8 भाव मे बेठे ग्रह या उनके अधिपति द्वारा होगा। 7 भाव मे बेठा ग्रह एक बार 3 भाव मे एक बार 7 भाव मे एक बार 11 भाव मे स्थान परिवर्तन कर फल देगा।

आप भली भाँती परिचित है की पूर्व मे बैठा व्यक्ति पश्चिम मे देखेगा एवम् पश्चिम मे बैठा पूर्व मे देखेगा। अतः 1 और 3 अथवा 1 और 11 मे स्थित ग्रह एक दूसरे को देखते है। इसको उदाहरण के माध्यम से विस्तार से देखेंगे ।

- ये दृस्टिया एवम् सिद्धांत सभी 9 ग्रहों पर लागू है। दो लग्नो का परस्पर देखेंगे । मुख्य लग्न जिसको तात्कालिक भी कह सकते हैं जिसमे भाव अथवा ग्रह का अध्ध्यन किया ज रहा है। दूसरा कालपुरुष कुंडली । जिसके माध्यम से ग्रह संबंधों का स्पष्ट ज्ञान करेंगे । बाकी सभी तथ्य एवम् सिद्धान्त आपको पाराशरी से मिलते जुलते ही दृष्टिगोचर होंगे । इसमे दशा का प्रयोग आरम्भ के समय में नहीं करेंगे । केवल गोचर का उपयोग करेंगे । इसी के माध्यम से जीवन के घटनाक्रम का विवेचन किया जायेगा ।
- आप सब से पुनः अनुरोध है इस पोस्ट को अच्छे से पढ़ें एवं इसका मनन करें । इसमें कुछ समझ नहीं आया तो नाड़ी का मूल समझ नहीं आयेगा ।
- नाड़ी ज्योतिष कई पद्धतियों मे पाई जाती है।

हम जिस पद्धिति का वर्णन कर रहे है। इसे विष्णु भाव पद्धिति कहते है । कई प्रचलित पद्दत्तियों की पुस्तकों मे कहा गया है की नाड़ी पद्धितीओं मे लग्न की आवश्यकता नही है, मगर आर जी राव की पुस्तकों में इसका संकेत मिलता है ।

❖ इस पद्धिति मे 4 मुख्य तथ्य है।

1। विष्णु भाव

2। ग्रह का गोचर

3। किसी भाव के 2, 3, 11, 12 एवम् 7 मे स्थित ग्रह।

4 । दिशा (Direction)

1। त्रिकोण भाव या राशियों की तत्व,दिशा, नक्षत्र लॉर्ड,नवांश,राशी लॉर्ड मे मित्रता,एवम् अन्य तथ्य एक ही होते है।

❖ उदाहरण के लिए मेष लग्न को ले।

त्रिकोण भाव 1,5एवम् 9 राशी हुई। ये तीनो है अग्नि तत्व है। तीनो है पूर्व दिशा है। तीनो के नक्षत्र लॉर्ड एक ही है। तीनो के नवांश एक है। तीनो राशियों के लॉर्ड आपस मे परम मित्र है। इसी प्रकार बहुत गुण एक ही पाये जाते है । इसलिए इन्हें विष्णु भाव कहा जाता है।

ठीक इसी प्रकार वृष, मिथुन एवम् कर्क लग्न को ले तो भी ये ही गुण पाये जाते है।

फिर इसी प्रकार किसी भी लग्न को ले तो उपरोक्त समानता पाई जाती है।इसलिए इन्हें विष्णु भाव कहा जाता है।

2. गोचर -नाडी मे इसे समझना अति आवश्यक है। जन्म समय की कुंडली मे जो ग्रह जिस भाव मे होता है उस ग्रह को स्थिर ग्रह माना जाता है। जिसे नेटल या पेदायशी ग्रह भी कहते है।

परन्तु वास्तव में ग्रह स्थिर नही होते। वे तो पूर्व से दक्षिण ,पश्चिम फिर उत्तर की तरफ गोचर करते है। जन्मकालिक ग्रह जहाँ होते है उंससे पीछे के गोचर से पूर्व जन्म के मिलने वाले गुणों का एवम् आगे के गोचर से भविष्य का अनुमान लगाते है।

3. किसी भाव के 2,3,11,12 एवम् 7 मे स्थित ग्रह उस भाव या उसमे स्थित ग्रह पर पूर्ण प्रभाव रखते है। पाराशरी पद्धिति मे इनसे पाप कतरी , शुभ कतरी, वेशी या वोशि आदि योग बनते है। ये योग नाडी मे भी बनते है।परन्तु कही कही फलित देने मे मामूली फर्क होता है । उदहारण के लिए, सूर्य एक भाव मे हो तो सूर्य से 12 एवं 2 भाव के ग्रह भी अस्त होते है। दूसरे सूर्य के 12 एवं 2 मे शत्रु एवम् पापी ग्रह हो तो भयंकर पाप कर्तरी योग बनता है।अगर शुभ ग्रह हो तो शुभ योग बनता है। अगर एक शत्रु पापी एवं एक मित्र पापी हो तो मध्यम पाप कर्तरी योग निर्मित होता है। ठीक इसी प्रकार मध्यम शुभ कर्तरी योग बनता है।

अत 2,3,11,12 एवम् 7 भाव मे स्थित ग्रह का प्रभाव, जिस भाव या ग्रह का अध्ययन कर रहे है उस पर भी देखा जाता है।

4. दिशा (Direction) इसे समझना अति आवश्यक है।।।

जब विष्णु भाव राशिओ की दिशा एक ही तो विष्णु भाव मे स्थित ग्रह एक ही राशि या एक ही भाव मे एकत्रित माने जायेंगे। इसके कारण विष्णु भाव नाड़ी मे 5 , 7 ओर 9 दृस्टि पूर्ण दृस्टि मानी गई हैं। विष्णु भाव मे स्थित ग्रह त्रिकोण मे कही भी स्थित/ बैठे माने जायेगे। परन्तु ग्रह का प्रभाव राशि , भाव, उसके अपने बल अनुसार होगा ।

- उसका आचरण जिस भाव मे बैठा है जिन ग्रहो का साथ बैठा है ।उनके अनुसार होगा।

किसी भी भाव से 11वे भाव मे बेठे ग्रह उस भाव या उसमे बैठे ग्रह या युति को लाभ देते है । जिसका अध्ययन किया जा रहा है।

इसी प्रकार तृतीय भाव मे बैठे ग्रह लग्न एवं लग्न मे बैठे ग्रह को अपनी मित्रता एवम् शत्रुता के अनुसार फल देंगे।

- अगर लग्न मे बैठे ग्रह तृतीय भाव मे बैठे ग्रह का मित्र है तो लाभ एवं शत्रु है तो हानि । यहॉ नैसर्गिक एवम् तात्कालिक मैत्री देखना आवश्यक रहेगा ।

- ठीक इसीप्रकार का व्यवहार 6 एवं 8 भाव मे बेठे ग्रह या उनके अधिपति द्वारा होगा।

7 भाव मे बेठा ग्रह एक बार 3 भाव मे एक बार 7 भाव मे एक बार 11 भाव मे स्थान परिवर्तन कर फल देगा।

- आप भली भाँती परिचित है की पूर्व मे बैठा व्यक्ति पश्चिम मे देखेगा एवम् पश्चिम मे बैठा पूर्व मे देखेगा। अतः 1 और 3 अथवा 1 और 11 मे स्थित ग्रह एक दूसरे को देखते है। इसको उदाहरण के माध्यम से विस्तार से देखेंगे ।
- ये दृस्टिया एवम् सिद्धांत सभी 9 ग्रहों पर लागू है।

दो लग्नो का परस्पर देखेंगे । मुख्य लग्न जिसको तात्कालिक भी कह सकते हैं जिसमे भाव अथवा ग्रह का अध्ध्यन किया ज रहा है। दूसरा कालपुरुष कुंडली । जिसके माध्यम से ग्रह संबंधों का स्पष्ट ज्ञान करेंगे ।

बाकी सभी तथ्य एवम् सिद्धान्त आपको पाराशरी से मिलते जुलते ही दृष्टिगोचर होंगे । इसमे दशा का प्रयोग आरम्भ के समय में नहीं करेंगे । केवल गोचर का उपयोग करेंगे । इसी के माध्यम से जीवन के घटनाक्रम का विवेचन किया जायेगा ।

- आप सब से पुनः अनुरोध है इस पोस्ट को अच्छे से पढ़ें एवं इसका मनन करें । इसमें कुछ समझ नहीं आया तो नाड़ी का मूल समझ नहीं आयेगा ।
- नाड़ी के नियमो के पोस्ट को मैं और सरल करके समझाने का प्रयास करता हूँ ।
- 1 - विष्णु / त्रिकोण भाव

हमने देखा किसी भी राशी से उसके पंचम और भाव उसी के स्वभाव, दिशा एवं तत्व में समानता होती है । जैसे मेष के पंचम में सिंह एवं नवम धनु का तत्व अग्नि है और इनकी दिशा पूर्व है ।

तो इन राशियों में स्थित ग्रहों को जब हम दिशा के अनुसार लिखेंगे तो ये एक ही दिशा पूर्व में आएंगे । भविष्य में फलादेश के समय इस त्रिकोण में स्थित सभी ग्रहों को हम एक बार मेष में मानेंगे, एक बार सिंह और अंत में धनु में मानेंगे ।

- *टोर्च के मेरे दिए गए उदाहरण को पुनः स्मरण कीजिये।*
- दृष्टि बल की पोस्ट आपके सभी संशय को हटा देगा।
- किसी भी ग्रह/ भाव/ राशी से 2-12, 3-11एवं 7 में स्थित ग्रह - सप्तम दृष्टि को हमने सबसे प्रभावशाली होती है इसको समझा ।
- किसी भी राशी से उसके 3 और 11 में स्थित राशियाँ उस राशी की दिशा के विपरीत होती हैं । और क्रॉस पर दिशानुसार ग्रहों को बैठाने पर वो विपरीत दिशा में आ जाते है यानी विपरीत दिशा में स्थित ग्रह एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं ।
- क्योंकि 3 और 11 भाव लग्न के 20- 30 डिग्री के एंगल पर आते हैं तो इनमे स्थित ग्रहों का ग्रह विशेष जिसको हम देख रहे हैं 30-35 % प्रभाव होगा ।

एक उदाहरण लेकर *दृष्टि* के नियम को समझते हैं ।

- योग निर्माण के समय सर्वप्रथम हम ग्रहों को दिशानुसार बैठाएंगे ।

❖ मान लीजिये हम जातक के पिता के विषय में विश्लेषण कर रहे है । पिता को सूर्य से देखा जाता है । हमने समझा कि किसी भी भाव से उसके पंचम और नवम भाव को हम त्रिकोण अथवा विष्णु भाव से संबोधित करते हैं और उनमें स्थित सभी ग्रहों को एक ही दिशा में बैठाते हैं ।

❖ यहाँ सूर्य मेष राशी और पूर्व दिशा में स्थित है । पूर्व में और कौन ग्रह हैं ? *पूर्व में बुध और गुरु स्थित हैं।* सूर्य के सप्तम में शनि एवं चंद्र हैं जो सूर्य स्थित विपरीत दिशा में हैं । जो पश्चिम दिशा है ।

❖ पश्चिम दिशा में 3 और 11 भाव भी आएंगे *जो इस कुंडली में रिक्त हैं ।*

❖ जब हम पिता के विषय में विवेचन करेंगे तो सूर्य किन किन ग्रहों से प्रभावित हो रहा है उनके साथ उसको रखेंगे/ योग बनाएंगे ।

- *सर्वप्रथम विष्णु भाव को देखते हैं -

सूर्य के विष्णु भावों अथवा पूर्व दिशा में स्थित सभी ग्रहों को *कम से अधिक डिग्री में रखेंगे* । यहाँ सूर्य के साथ बुध है एवं उसके नवम में गुरु है

इस योग को हम 3 भागों में विभाजित करेंगे (जब योग निर्माण का विषय आएगा तब इसपर विस्तार से चर्चा करेंगे) ।

- तो पूर्व दिशा में सूर्य को देखते समय 3 योग बनेंगे

- सूर्य - बुध
- सूर्य - गुरु
- सूर्य - बुध - गुरु ।

- जहाँ सूर्य स्थित है वो राशी पिता का लग्न हुई । पिता के विषय में हम कह सकते है कि पिता उतावले स्वभाव का होगा, हर काम जल्दी जल्दी करने वाला होगा । उग्र स्वभाव वाला होगा (क्योंकि राशी मेष है)।
- ग्रह तो सदा चलायमान हैं तो सूर्य जब बुध के संपर्क में आएगा तो पिता की उग्रता में कमी आएगी और बुद्धि का अधिक संचार होगा ।
- सूर्य जब आगे बढ़ेगा तो उसपर बुध का प्रभाव भी आएगा । बुध से बुद्धि, वाक्पटुता, हास्य आदि पिता के स्वभाव में आएगा । अब सूर्य गुरु के ऊपर से भी गुज़रेगा तो गुरु का स्वभाव भी ग्रहण करेगा । तो गुरु सूर्य को ज्ञान देगा, धर्म परायण बनाएगा । उसकी प्रवृत्ति धार्मिक और बुद्धिमान व्यक्ति के समान होगी ।
- सूर्य के 2 यानी कुटुम्ब भाव में राहु स्थित है । राहु सूर्य का परम शत्रु है जो सूर्य को ग्रहण भी लगता है । राहु के सम्पूर्ण फल को समझने के लिए एक बार राहु को वृष राशी, एक बार कन्या राशी और एक बार मकर राशी में रखेंगे । इससे सूर्य पर राहु के सम्पूर्ण प्रभाव का हमको ज्ञान हो जाएगा ।

- सूर्य के कुटुम्ब एवं धन भाव में राहु ।

राहु के कारण पिता 2 भाव के क्या फल प्राप्त होंगे ?

1 कुटुम्ब जन ईर्ष्यालु, निंदक, षड्यंत्रकारी इत्यादि होंगे ।

2 उसका धनार्जन विपरीत मार्ग से भी होगा ।

3 धन का क्षय गलत काम के लिए भी हो सकता है ।

4 राहु चोर भी है तो धन के चोरी होने की संभावना भी बनी रहेगी ।

- अब राहु को 6 भाव में ले जाते हैं जो उसका विष्णु भाव है ।
- 6 भाव से हम नौकर, शत्रु , रोग आदि को देखते है । यानी पिता के शत्रु नीच प्रकर्ति के होंगे जो षड्यंत्र करके हानि पहुंचाएंगे । हानि क्यों ? जब राहु को 6 भाव में ले जाएंगे तो उसका सम्पूर्ण प्रभाव सूर्य के 12 भाव पर भी होगा ।
- अब राहु को 10 भाव में ले जाते हैं जो सूर्य का कर्म भाव है ।
- सूर्य के कर्म स्थल पर राहु का विपरीत प्रभाव होगा । झूठ, बदनामी और षड्यंत्र पिता को सदा कष्ट में रखेंगे ।
- सूर्य से 3 भाव जो उसके मित्र एवं सहोदर का भाव है ।

3 भाव स्थित राशी से हम उनका स्वभाव समझ सकते हैं । 3 भाव पर शनि एवं चंद्र का प्रभाव है जिससे हम उनके एवं उनके व्यबसाय आदि का ज्ञान कर सकते हैं ।

- शनि के पूर्व केवल राहु है और उसके बाद के सभी भाव खाली हैं । रेगिस्तान वाले उदाहरण को पुनः स्मरण कीजिये...उच्च का शनि होते हुए भी बलहीन है । और बची खुची कसर शत्रु चंद्र केतु और मंगल ने पूरी कर दी है । *शनि अति कमज़ोर है इस कुंडली में ।*
- इसका अर्थ यह हुआ कि पिता का व्यवसाय छोटा- मोटा होगा । लो इनकम । और उसके मित्र भी अच्छी स्थिति के लोग नहीं होंगे ।
- सूर्य के एकादश भाव को देखते हैं ।

एकादश पर शनि और चंद्र का प्रभाव है यानी इनकम होगी मगर मन के अनुसार नही होगी ।

क्योंकि शनि कमज़ोर है तो जातक नौकरी करता होगा किसी लोअर पद पर और उसकी आय कम होगी ।

- वैदिक के दृष्टिकोण से तो ये कुंडली अति उत्तम है । सूर्य उच्च का , शनि उच्च का , मंगल एवं गुरु स्वग्रही , शुक्र उच्च का । 6 महीने बाद इस कुंडली को पुनः देखेंगे तब आप कुछ विपरीत ही बोलेंगे । शनि जब गुरु के ऊपर से गोचर करेगा तब पदोन्नति करवाएगा ।

- सूर्य के मातृ भाव को देखते हैं ।

- माता का स्वभाव कर्क राशी के स्वभाव से निर्धारित होगा । कर्क के विष्णु भाव में (5) मंगल - केतु हैं और दूसरे विष्णु भाव में उच्च शुक्र है । यहाँ 4 योग बनेंगे जो सूर्य के मातृ भाव का वर्णन करेंगे । फलादेश को भविष्य के लिए छोड़ देते हैं ।

सूर्य से पंचम भाव पर सूर्य - बुध- गुरु का प्रभाव है । जातक- सूर्य की शिक्षा संतोष जनक रही । 6 भाव का विवेचन ऊपर किया है मैंने ।।

- अब सूर्य के दाम्पत्य भाव को देखते हैं ।

- नाड़ी के अनुसार जातक की माँ का नैसर्गिक कारक चंद्रमा होता है । यहाँ सूर्य से सप्तम भाव तुला है तो पिता का दाम्पत्य सप्तमेश शुक्र, सप्तम स्थित चंद्र और शनि इन तीन ग्रहों और तुला, कर्क से

प्रभावित । किसका कब और क्या प्रभाव होगा वो सूर्य की यात्रा पर निर्भर करेगा । इस विषय को भविष्य में विस्तार से देखेंगे ।

❖ प्रत्येक भाव का प्रभाव सूर्य पर क्या होगा उसको इसीप्रकार देखेंगे ।

❖ ग्रहों को दिशा के अनुसार कैसे रखें -

1. सर्वप्रथम ग्रहों को कम डिग्री से अधिक के क्रम में प्रत्येक दिशा में बैठाएँ.

- 4,8,12 राशी - उत्तर दिशा
- 1, 5, 9 राशी - पूर्व दिशा
- 2, 6, 10 राशी - दक्षिण दिशा
- 3,7,11 राशी - पश्चिम दिशा

❖नोट - जो ग्रह वक्री हों उनको दो जगह लिखा जायेगा , एक तो जिस राशी में बैठे हैं उस राशी की दिशा में और दूसरे उस राशी की दिशा में जिसको वो ग्रह वक्री होकर देख रहा है।

2. ग्रह परिवर्तन के विषय को बाद में समझाया जायेगा।

❖राशियों के रंग भेद-

- मेष - लाल

- वृष - सफ़ेद
- मिथुन - हरा
- कर्क- गुलाबी
- सिंह - ब्राउन

- कन्या - ग्रे
- तुला - रंग बिरंगा
- वृश्चिक - काला
- धनु - सुनहरी
- मकर - पीला
- कुम्भ - रंग बिरंगा
- मीन - गहरा ब्राउन

❖ ग्रहों के वर्ण -

गुरु एवं शुक्र - ब्राह्मण

- सूर्य एवं मंगल - क्षत्रिय
- चन्द्रमा एवं बुध - वैश्य
- शनि - शूद्र (स्लेव)
- राहु - मुस्लिम
- केतु - ईसाई

❖ रिश्ते / सम्बन्ध

- सूर्य:- पिता , पुत्र , राजा , समाज में नामी गिरामी हस्ती अथवा सरकार में उच्चपदस्त अफसर , विवाह के उपरान्त ससुर ।
- चन्द्रमा:- :रानी , माँ , सास , पुत्री ।
- मंगल :-छोटा भाई , स्त्री की कुंडली में पति, सरकार में मध्यम वर्गीय अफसर ।
- बुध :- दूसरा छोटा भाई , प्रेमिका / प्रेमी , समाज के बुद्धिजीवी ।

- गुरु :- पुरुष की कुंडली में जीवकारक यानी स्वयं जातक , मार्गदर्शक, शिक्षक ।
- शुक्र :- स्त्री की कुंडली में जीवकारक यानी स्वयं जातिका , पुत्री , बहु , बड़ी बहन , पत्नी , स्त्री जातक ।
- शनि :- बड़ा भाई , नौकर , सरकार में निम्न स्तर पर काम करने वाला जैसे चतुर्थ श्रेणी का श्रमिक अथवा लोअर क्लर्क ।
- राहु:-दादा , नानी ।
- केतु:- नाना , दादी ।

❖ शुभ एवं पाप कर्तृ ग्रह -

- स्थिर स्वभानुसार गुरु, शुक्र एवं शुक्ल पक्षीय चन्द्रमा को शुभ माना गया है। अगर बुध इनमे से किसी से भी युक्ति बनाये तो शुभ माना जायेगा।
- सूर्य, मंगल, शनि, राहु एवं केतु इन सबको पाप कर्त्री माना गया है। इनके साथ अगर बुध युक्ति करे तो उसको भी पाप कर्तृ माना जायेगा।
- चन्द्रमा - शुक्ल एकादशी से कृष्ण पंचमी तक बली माना गया है।
- घटता चन्द्रमा अधिक पापी माना गया है और बढ़ता कम।
- एक ही तिथि में घटते और बढ़ते चन्द्रमा में अधिक अंतर पाया गया है। ये अनुभव का विषय है इसपर आगे चर्चा करते रहेंगे।
- कुछ लोग चंद्र को शुक्ल अष्टमी से बली मानते हैं ।
- इन कमैंट्स को पढ़िए और कोई संशय हो तो प्रश्न करें ।

ग्रहों को दिशा के अनुसार कैसे रखें -

1. सर्वप्रथम ग्रहों को कम डिग्री से अधिक के क्रम में प्रत्येक दिशा में बैठाएँ.

- 4,8,12 राशी - उत्तर दिशा
- 1, 5, 9 राशी - पूर्व दिशा
-2, 6, 10 राशी - दक्षिण दिशा
- 3,7,11 राशी - पश्चिम दिशा

नोट - जो ग्रह वक्री हों उनको दो जगह लिखा जायेगा , एक तो जिस राशी में बैठे हैं उस राशी की दिशा में और दूसरे उस राशी की दिशा में जिसको वो ग्रह वक्री होकर देख रहा है । ये बहुत इम्पोर्टेन्ट पॉइंट है इसको स्मरण में रखें ग्रहों को दिशा के अनुसार बैठाते समय ।*

- जब कोई शुभ ग्रह दो पापी ग्रहों के मध्य फंसेगा तो पाप कर्तरी योग का निर्माण होगा ।

इसको नाड़ी में अवरोध के रूप में माना जाता है । दूसरे शब्दों में ग्रह अपने पूर्ण फल से जातक को वंचित रखेगा ।

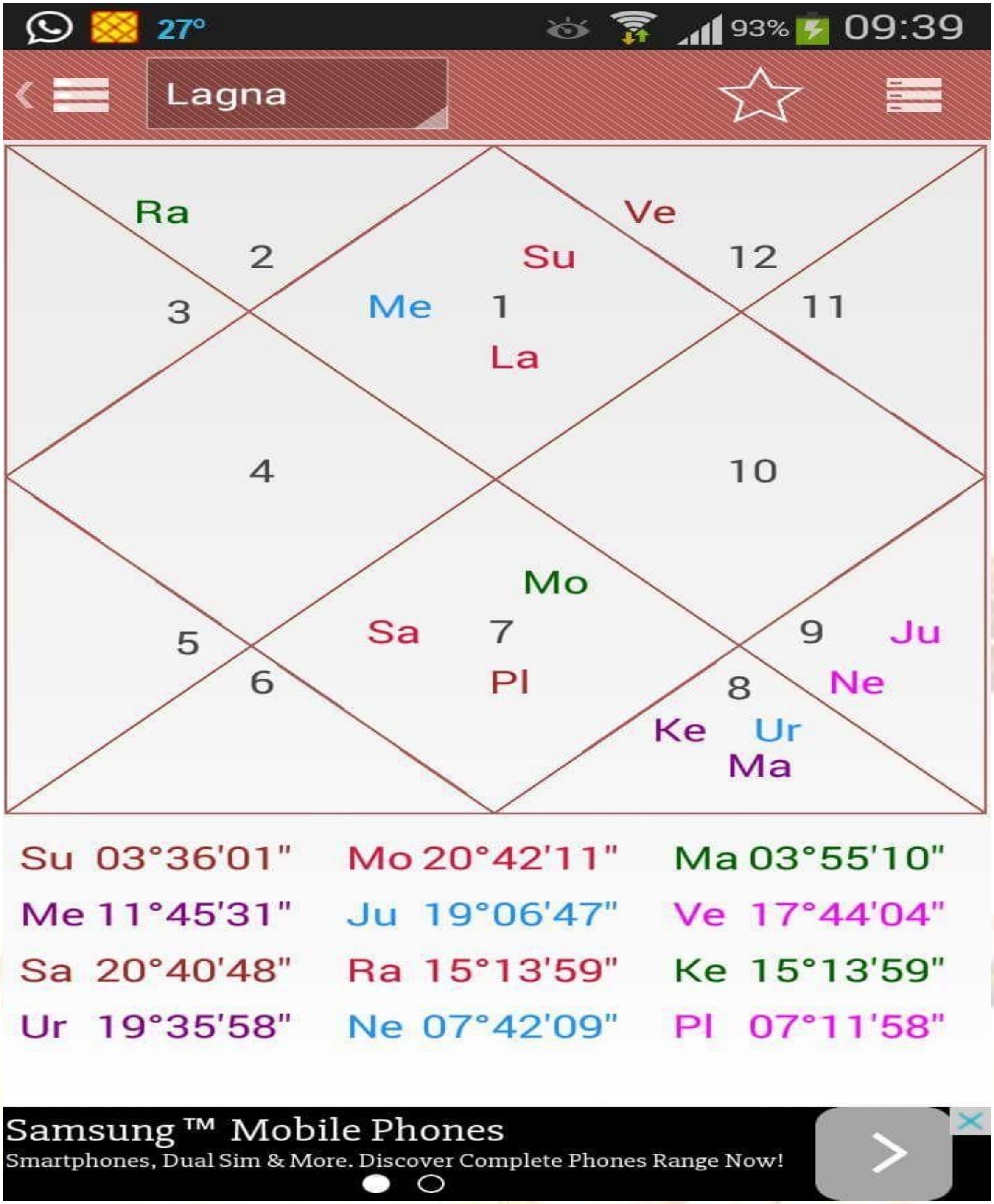
27°
93%
09:39
Lagna
Ra
2
Ve
Su
12
3
Me
1
11
La
4
10
Mo
5
Sa
7
9
Ju
6
Pl
8
Ne
Ke
Ur
Ma
Su 03°36'01"
Mo 20°42'11"
Ma 03°55'10"
Me 11°45'31"
Ju 19°06'47"
Ve 17°44'04"
Sa 20°40'48"
Ra 15°13'59"
Ke 15°13'59"
Ur 19°35'58"
Ne 07°42'09"
Pl 07°11'58"
Samsung ™ Mobile Phones
Smartphones, Dual Sim & More. Discover Complete Phones Range Now!

Planets

Pla		Sign	Degree	Naks	
Lag		Ari	18°40'33"	Bharni	(2)
Sun		Ari	03°36'01"	Ashwi	(2)
Mon		Lib	20°42'11"	Visha	(1)
Mar	(R)	Sco	03°55'10"	Anura	(1)
Mer	(RC)	Ari	11°45'31"	Ashwi	(4)
Jup		Sag	19°06'47"	PoSha	(2)
Ven		Pis	17°44'04"	Revat	(1)
Sat	(R)	Lib	20°40'48"	Visha	(1)
Rah	(R)	Tau	15°13'59"	Rohin	(2)
Ket	(R)	Sco	15°13'59"	Anura	(4)
Ura	(R)	Sco	19°35'58"	Jyesh	(1)
Nep	(R)	Sag	07°42'09"	Moola	(3)
Plu	(R)	Lib	07°11'58"	Swati	(1)

Samsung ™ Mobile Phones
Smartphones, Dual Sim & More. Discover Complete Phones Range Now!

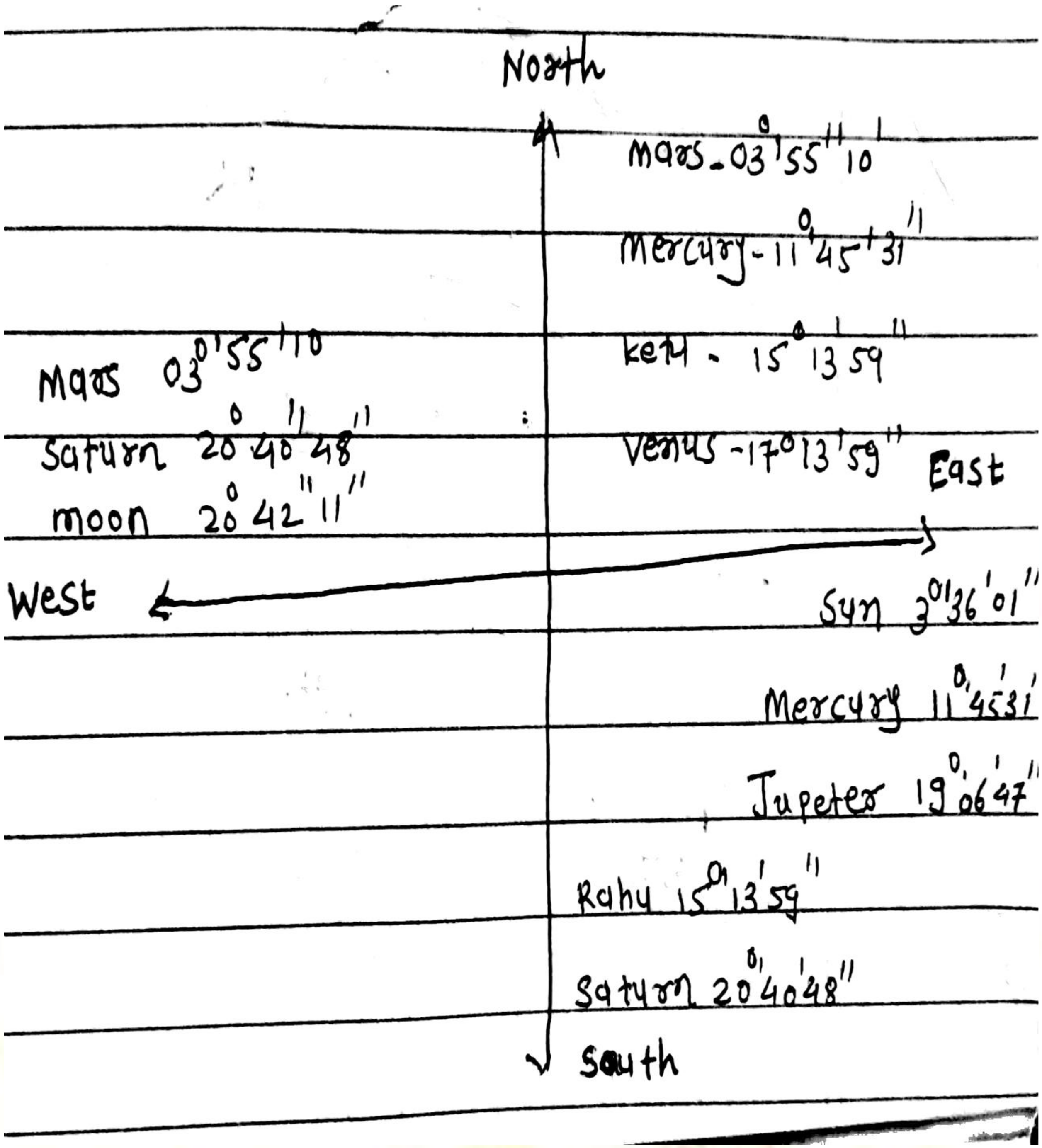
North
Mars-03°55'10"
Mercury-11°45'31"
Ketu - 15°13'59"
Venus -17°13'59"
East
Mars 03°55'10
Saturn 20°40'48"
moon 20°42'11"
West
Sun 3°36'01"
Mercury 11°45'31'
Jupeter 19°06'47"
Rahu 15°13'59"
Saturn 20°40'48"
South

❖भूमी के कारक

- मंगल+ चन्द्रमा - खेती की भूमी
- बुध - दूकान एवं व्यावसायिक भूमी
- शुक्र - बना हुआ घर
- शनि - बड़े उद्योग की भूमी
- राहु - बंजर भूमी, कब्रिस्तान आदि की भूमी
- केतु - मंदिर की भूमी

नोट - इन कारकों का उपयोग एक विशेष तरीके से होता है। जैसे,

- बुध+ शुक्र - एक बना हुआ घर जिसमे दुकाने भी हो सकती हैं।
- मंगल + शुक्र + राहु - बहु मंज़िली इमारत। ये योग बड़े वाहन के लिए भी है। मंगल - मशीन, शुक्र - आरामदेह; लक्ज़री, राहु - बड़ा ।
- कर्क का मंगल + राहु - जर्जर इमारत ।
- मकर का मंगल + राहु - पुरानी बड़ी इमारत ।

❖ग्रहों के वर्ण -

- गुरु एवं शुक्र - ब्राह्मण
- सूर्य एवं मंगल - क्षत्रिय
- चन्द्रमा एवं बुध - वैश्य
- शनि - शूद्र (स्लेव)
- राहु - मुस्लिम
- केतु - ईसाई

❖**राशियों में लिंग भेद** - (सही किया हुआ)

- वैदिक ज्योतिष में सभी विषम 1,3,5,7,9,11राशियाँ पुरुष एवं सभी सम 2,4,6,8,10,12 राशियाँ स्त्री राशियाँ मानी गयी हैं। नाड़ी में राशियों के लिंग थोड़े भिन्न हैं -
- 1, 5,8,9,10,12 - पुरुष
- 2, 3,4,6,7 - स्त्री इन राशियों को पञ्च कन्या के नाम से भी संबोधित किया जाता है।

नोट- देखा गया है कि कुम्भ राशी का व्यवहार 60% पुरुष एवं 40% स्त्री का होता है।

❖ प्रकर्ति की रचना में भी लिंग भेद नज़र आता है। यहाँ भी पुरुषों के अनुपात में स्त्रियां कम है। यही सिद्धांत सभी जीवों पर भी लागू है एवं यही अनुपात राशियों में भी दिखाई देता है- 5.4 स्त्री एवं 6.6 पुरुष का है। पुरुष एवं स्त्री का अनुपात 80% से कम नहीं होना चाहिए, संभवतः ये सिद्धांत सभी वस्तुओं पर भी लागू होता है।

❖एक बार पुनः स्मरण कर लें- अगर सभी ग्रह स्त्री राशियों में स्थित हों तो पञ्च कन्या योग उत्पन्न होता है और जातक के घर में कन्यायें अथवा स्त्रियों की अधिकता रहती है। एक बात और प्रमुख है की मकर राशी के पूर्वार्ध में जल तत्व की अधिकता रहती है एवं उत्तरार्ध में पृथ्वी तत्व की।

ग्रहों के दीप्तांश -

- सूर्य 15 अंश
- चन्द्रमा* 12 अंश
- मंगल* 8 अंश
- बुध 7 अंश
- गुरु 9 अंश
- शुक्र 7 अंश
- शनि 6 अंश

❖विशेष राहु केतु जिस राशी में। स्थित होंगे उसके अधिपति के दीप्तांश को ग्रहण कर लेंगे और अपना प्रभाव् दिखाएंगे । ये मैं अपने अनुभव से लिख रहा हूँ ।नाड़ी ज्योतिष में कारकों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। जिन कारकत्वों का हम प्रयोग करेंगे वो इस प्रकार है-

1. ग्रहों के कारकत्व
2. व एवं उनके कारकत्व
3. राशियाँ एवं उनके कारकत्व
4. कालपुरुष कुंडली के अनुसार ग्रहों के स्थिर कारकत्व
5. जन्मांग में ग्रहों की स्थिति के अनुसार, जिनको हम 'तात्कालिक' कारकत्व कहते हैं।

नोट- उपरोक्त कारकत्वों के अतिरिक्त फलादेश में ग्रह गोचर का प्रयोग होगा एवं गोचर एवं जन्मकालिक ग्रह स्थिति में परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान दिया जायेगा

❖ग्रहों के कारकत्व

सूर्य

❖पुरुष तत्व प्रधान ग्रह। आत्मा, पिता, पुत्र, राजा, मंत्री, उच्चपदस्त व्यक्ति जैसे किसी संस्थान का चेयरमैन, वाईस प्रेजिडेंट आदि। सूर्य चमक/प्रकाश का द्योतक है। शक्ति का द्योतक है।किला, ऊष्मा, साहस, अग्नि, राजसी सहायता, भूमि, वन, दाहिनी आँख, चतुष्पाद पशु, शेर, पत्थर, पूर्व दिशा का अधिपति, माणिक्य, नारंगी रंग, आत्म बोध, सत्व गुण, राज्य, गुफा, कंटीले झाड़ एवं पेड़, औषधि(माणिक्य भस्म आदि) । सुनसान जंगली इलाका, शिव आराधना , धैर्य , राज्यकृपा , बुढ़ापा , पिता , चौकोर आकार , तांबा , हड्डी , यश और कीर्ति , नेत्र रोग , शीर्ष रोग , पूर्व दिशा । अग्नि तत्व एवं पित्त प्रकर्ति । स्मरण रखें - सूर्य कालपुरुष कुंडली में पंचमेश है इसीलिए ये संतान का कारक ग्रह माना गया है।

❖ सूर्य के बलहीन अथवा पीड़ित होने पर जातक अधिक नमक का सेवन करने लगता है साथ ही उसे बार बार थूकने की इच्छा होती है

- ❖ कालपुरुष के पंचम भाव का स्वामी होने के कारण प्रेम बुद्धि विद्या संतान और पूर्व पुण्य आदि विषयों में इसकी भूमिका परम विचारणीय है
- ❖ कुंडली में बलहीन होने पर हड्डियों के रोग जैसे उनका भुरभुरा होना या टेढ़ा हो जाना आदि का निर्माण करता है

चंद्रमा

- ❖चंद्रमा भगवान् शिव की अर्धांगिनी मां पार्वती का प्रतीक है. यह खाद्य पदार्थों , जल , दूध , शीतलता , मन , माता , सज्जनता , कला , महिला मित्रों , समुन्दर , तालाब , झील , कुआं और धन समृद्धि का कारक है.
- ❖चंद्रमा यदि पीड़ित और बलहीन हो तो बदनामी , धोखा , फरेब , दुष्टता , चरित्रहीनता और व्यभिचार का भी प्रतिनिधित्व करता है. कुंडली में अपनी स्थिति अनुसार बारह राशियों में गोचर करते हुए यह जातक को अच्छा या बुरा फल प्रदान करता है.
- ❖यात्रा और मुहूर्त के लिये चंद्रमा की स्थिति परम विचारणीय है. चंद्रमा की गोचर में शुभाशुभ स्थिति ही किसी जातक के लिये यात्रा और मुहूर्त तय करती है.
- ❖चंद्रमा व्यक्ति के अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं को नियंत्रित करता है. इस प्रकार वह परमपिता परमेश्वर द्वारा संसार रूपी मंच पर खेली

जा रही लीला में महत् भूमिका निभाता है. कहतें हैं अच्छाई का अस्तित्व तभी तक है जब तक बुराई विद्यमान है.

❖चंद्रमा चरित्रहीनता , व्यभिचार और दुष्टता के साथ ही पवित्रता , शुद्धता और सज्जनता को व्यक्त करते हुए नवग्रह शक्ति वितरण व्यवस्था में अपना दायित्व पूरा करता चलता है.

❖स्त्रियों की कुंडली में विवाह से पहले यह मां का और विवाह के बाद सास का प्रतिनिधित्व करता है.

पागलपन और अवसाद के लिये भी चंद्रमा को उत्तरदाई माना जाता है...

मंगल

❖मंगल को भूमिपुत्र कहा गया है. यह पृथ्वी मां का प्रिय पुत्र है. जैसे बुध को भगवान विष्णु का प्रतीक माना जाता है वैसे ही मंगल भूमि का प्रतीक है. ज्योतिष का आधार पृथ्वी है. यानि मनुष्य ज्योतिष का आधार है. और मंगल उसका प्रतिनिधित्व करता है. इसीलिये कालपुरुष की प्रथम राशि मेष जो की मंगल की मूलत्रिकोण राशि है को लगन स्थान प्राप्त है.

❖मंगल योद्धा प्रकृति का प्रतिनिधि है. सभी तरह के हथियार , युद्ध , निर्माण , भूमि , पराक्रम , ऋण और अग्नि का कारक है.

❖पुरुष की कुंडली में यह भाई का और स्त्री की कुंडली में पति का कारक है. यदि मंगल कुंडली में सुस्थित हो बहुत धन संपत्ति और

रुतबा प्रदान करता है. क्योंकि यह सेनापति और मंत्री का भी कारक है.

❖यदि पीड़ित अथवा बलहीन हो तो जीवन कष्टमय हो जाता है. यदि किसी स्त्री की कुंडली में मंगल नीचस्थ हो तो उसका पति किसी छोटे तबके का होगा. गलत काम करने वाला और तुरंत पारा गरम स्वभाव का होगा. तुरंत आपा खो देगा.

❖जबकि उच्चस्थ मंगल होने पर पति जोशीला और मजबूत होगा. सीमाओं को तोड़ने वाला विस्तारवादी होगा. जन्मकालीन मंगल की राशि और भाव देखकर काफी हद तक सटीक फलादेश किया जा सकता है. लाल मूंगा मंगल का रत्न है. इसकी धातु तांबा और स्वर्ण हैं. प्रतिनिधि देवता भगवान् कार्तिकेय हैं.

बृहस्पति

❖पुरुष जातक की कुंडली में जीव का कारक। गुरु एवं गुरु की तरह सम्मानित। गुरु यानी ज्ञान देने वाला जैसे अधयापक, पुजारी, डॉक्टर इत्यादि। धार्मिक संस्थान का अध्यक्ष। पीला एवं सुनहरा रंग। नाक, सम भुज आकर, अंगरीक गोत्र, धार्मिक स्थान, विद्यालय, अनुसंधान केंद्र, कॉलेज, अस्पताल इत्यादि। ब्राह्मण का श्राप, पूजा योग्य पेड़ आदि, वामनावतार, टिन धातु, पुखराज, मीठा स्वाद, मोटा चना, पीपल का पेड़। धार्मिक गुरु, मंत्री, भगवान ब्रह्मा जी, धार्मिक अध्ययन एवं अनुसंधान, हल्दी, आध्यात्मिक सुख

बुध

❖ भगवान् विष्णु का सूचक, चंद्र पुत्र, ललाट, बुद्धि, विद्या अध्ययन; जातक की विद्या का अनुमान बुध से लगाया जाता है। इंटेलेक्ट, व्यावसायिक भूमि ।कालपुरुष कुंडली में तृतीयेश होने के कारण ये मित्र, आस पड़ौसी, हरियाली, छोटा चाचा, छोटे से छोटे भाई अथवा बेहेन।छोटे पेड़ पौधे, मटीली चर्म, व्यापार; ट्रेडिंग, लेन-देन,सूचना-प्रसारण,आकर्षण, राज कुमार, तीर का आकार, आत्रेय गोत्र, बुद्धावतार, धातु, मसालेदार स्वाद, पत्तियां, पन्ना, चना, गणित, एकाउंट्स, स्टेटिस्टिक्स, लॉजिक, व्यवहार।

नोट- मंगल एवं बुध परस्पर शत्रु हैं और इनकी युति विद्याध्ययन में रुकावट उत्पन्न करते हैं। मंगल अहंकार है इसलिए जातक को विद्याध्ययन एवं चिंतन में अहंकार हो जाता है जो विद्या अध्ययन में अवरोधक होता है।

❖बुध बुद्धि और शिक्षा है. शुक्र उच्च शिक्षा है. इन दोनों की युति एवं संयोग व्यक्ति को उच्च शिक्षा का आश्वासन देती है. बृहस्पति ज्ञान और महानता का सूचक है. यदि बुध और शुक्र के साथ इसका भी संयोग हो जाये तो उच्च शिक्षा में गहन ज्ञान का समावेश हो जाता है और व्यक्तित्व बुद्धि शिक्षा और ज्ञान का ऐसा पुंज बन जाता है जो की आदर्श होता है...

शुक्र

❖स्त्री जातक की कुंडली में जीव का कारक । गाल, देवी महालक्ष्मी, धन, साजो- सज्जा एवं ऐशो-आराम का सामान, घर, बड़ी बहिन, ननद, पुत्र वधु, कमल का फूल, अंडाकार आकृति, राक्षश गुरु, संजीवनी, जीवन दायिनी औषधि, हल्दी, कुमकुम, दीर्घ आयु, शादी-शुदा महिलाएँ, पञ्च भुजी आकार, भार्गव गोत्र, धन स्थान, प्रसन्नता एवं आनंद।

- शुक्र :शुक्र खुशहाली , संचित धन , राजसी रूचि , पत्नी , स्त्री , सभी प्रकार के भोग एवं आनंद , परशुराम अवतार , पंचधातु , खट्टा स्वाद , रसीले फल , मंत्री , हीरा , मिट्टी , उच्च शिक्षा , घर का रखरखाव , झक्क सफ़ेद रंग , दही और कला का कारक है.

❖शुक्र की शुभ स्थिति में जीवन दुःख और क्रोध से रहित उत्सवमय बीतता है.

❖पौराणिक मान्यता अनुसार शुक्र और बृहस्पति दोनों आचार्य हैं. दोनों को गुरु पद प्राप्त है. दोनों बुद्धिमान और सिद्धांत प्रिय हैं.

❖शुक्र मृतसंजीवनी विद्‍या के ज्ञाता हैं जबकि बृहस्पति को यह ज्ञान नहीं है. इसलिए सभी प्रकार के लाइफ सेविंग ड्रग्स शुक्र का अधिकार क्षेत्र हैं. शुक्र वैदिक परंपरा से विरोध रखता है और खानपान में तामसी कही जाने वाली वस्तुओं का भी सेवन कर लेता है...

शनि

❖ग्रह के कारकत्व -(उत्तरकालामृत अनुसार)

- जड़ता एवं आलस्य , अवरोध , मंदगति , घोड़ा , हाथी , चमड़ा , आय बहुत कष्ट , रोग , विरोध , दुःख , मरण , दास दासी , चांडाल , कलांग , बंजारे , बुरी शक्ल , दान , स्वामी , आयु , नपुंसक , पक्षी , बंधुआ मजदूरी , अधर्म , मिथ्या भाषण , बुढ़ापा , नसें , शिशिर ऋतु , क्रोध , अनुशासन हीनता परिश्रम , हरामी , गंदे वस्त्र , मकान , बुरे विचार , अवसाद , काला रंग , अधो दृष्टि , पाप कर्म , क्रूर कर्म , राख उड़द , सरसों का तेल , लोहा , शराब , शूद्र , लंगड़ापन , पश्चिम दिशा कृषि रोजगार , शस्त्रागार , जनता , नौकर , एकांतवास , समाज से बहिष्कृत , पाताल लोक , पतन , शल्य विद्या , तमस गुण , भय , भैंसा , तत्व वायु और प्रकृति वात.
- शनि कालपुरुष के दशम और एकादश भाव का स्वामी है. यह आजीविका उसकी गुणवत्ता और उससे प्राप्त आय को दर्शाता है. दशम का अधिपति होने के कारण आजीविका के साथ साथ यह जातक का सम्मान और उस पर राज्यकृपा भी निश्चित करता है. एकादश का स्वामी होने के नाते बड़े भाई ताऊ रोग दूसरा विवाह भी शनि के अंतर्गत आते हैं.
- शनि ब्रह्मांडीय न्यायाधीश है. यह कभी किसी का बुरा नहीं करता. शनि को एक बेहद पवित्र ग्रह माना गया है. पूर्वजन्म के कर्मों का फल देना इसका काम है. शनि यमराज है. नवग्रहों में एक मात्र शनि ही ऐसा ग्रह है जो किसी को भी कभी भी मृत्यु दे सकता है.

वचनबद्धता समयबद्धता और कार्यबद्धता शनि का अधिकार क्षेत्र हैं. नीलम शनि का कारक रत्न है.

राहु

❖ मुख , पहिया , विशालता , गोल आकार , धनुष , काला रंग , कान छाता , काला चश्मा , भीड़ और भगदड़ , कटु वचन , नीच औरत , दूषित भावनाएं , जुआ , शराबखाना , विदेशी भाषा और व्यक्ति , उल्टी लिपि , नकाबपोश , मकान का मुख्य द्वार , तोप या बन्दूक की नली , सूई का छेद वर्जनाहीन कौटोम्बिक लैंगिक सम्बन्ध , आधारहीन और भ्रामक मान्यता और जो सही है उससे उलट व्यवहार का कारक है. सभी प्रकार के रिसाव और लीकेज राहु के अंतर्गत आते हैं. यह शुरू में अधोमुखी और बाद में ऊर्ध्वमुखी है. इसका दशान्तर आरम्भ में पतन और बाद में उत्थान देता है.

केतु

❖ शिखर, ध्वजा , दिशाहीन, क्रूर, निंदक, कंजूस, दादी, नाना, मठाधीश, काश्यप गोत्र, दुर्गन्ध कारक, मोक्ष , पतली लंबी गली, सीढ़ी, मबत्ती, चेन, कुशा, रस्सी, धागा, केश, आयुर्वेद ; जड़ी बूटियां (पतली लंबी जड़), कैंसर, घाव, कोढ़, बवासीर, वकालत, वट वृक्ष की जटाएं, अवरोध / रुकावट, अगस्त्य ऋषि, व्याघ्र चर्म, दाढ़ी, हाथी की सूंड, पशुओं की पूँछ, पुरुष एवं स्त्री जननांग, पाताल ।

❖केतु केश का कारक माना गया है । काले केश होने पर जातक अपने पूर्व कृत्य कर्मो को भोग रहा है । सफ़ेद होने पर ऐसा माने की जातक शीघ्र अपने पूर्व कृत्य कर्मों से मुक्ति पा रहा है । स्वर्ण वर्ण केशों के लिए कहा गया है कि ये सूर्य एवं केतु को दर्शाता है और ऐसे में जातक शुभ कृत्यों से स्वयं को जीवन यात्रा में मोक्ष मार्ग को प्रशस्त कर सकता है ।

ग्रहों के दीप्तांश

- *सूर्य* 15 अंश
- *चन्द्रमा* 12 अंश
- *मंगल* 8 अंश
- *बुध* 7 अंश
- *गुरु* 9 अंश
- *शुक्र* 7 अंश
- *शनि* 9 अंश

❖विशेष* राहु केतु जिस राशी में। स्थित होंगे उसके अधिपति के दीप्तांश को ग्रहण कर लेंगे और अपना प्रभाव् दिखाएंगे । ये मैं अपने अनुभव से लिख रहा हूँ ।

राशियों का गुण स्वभाव -

- मेष - यह राशी चक्र की पहली राशी है। यह अग्नितत्व , तमोगुणी और चर स्वभाव राशी है। इसकी दिशा पूर्व है। इस राशी का स्वामी

मंगल है। यह मंगल की मूलत्रिकोण राशि है। इस राशि का प्रतीक चिन्ह मेढ़ा संघर्ष का परिचायक है।

- वृषभ - इस राशी का स्वामी शुक्र है । यह राशी चक्र की दूसरी राशी है। यह पृथ्वीतत्व , रजोगुणी और स्थिर स्वभाव राशी है. इसकी दिशा दक्षिण है। इस राशी का प्रतीक चिन्ह सांड आसक्ति और दृढ़ता का
- मिथुन- यह राशी चक्र की तीसरी राशी है। यह वायुतत्व , सत्वगुण और द्विस्वभाव राशी है। इसकी दिशा पश्चिम है। इस राशि का स्वामी बुध है।इस राशी का प्रतीक युगल है जो की बुद्धिमता और परस्पर व्यवहार का परिचायक है।
- कर्क - यह राशि चक्र की चौथी राशि है. यह जलतत्व , तमोगुणी और चर स्वभाव राशि है. इसकी दिशा उत्तर है. इस राशि का स्वामी चंद्रमा है. इस राशि का प्रतीक चिन्ह केकड़ा मानसिक विस्तृता का प्रतीक है.
- सिंह - यह राशी चक्र की पांचवीं राशी है। यह अग्नितत्व , रजोगुणी और स्थिर स्वभाव की राशी है। इसकी दिशा पूर्व है। सूर्य इस राशी का स्वामी है।इस राशी का प्रतीक चिन्ह सिंह है जो शक्ति साहस और धूर्तता का परिचायक है।
- कन्या - यह राशी चक्र की छठी राशी है। यह पृथ्वीतत्व , सत्वगुण और द्विस्वभाव राशी है। इसकी दिशा दक्षिण है। बुध इस राशि का

स्वामी है। बुध की यह मूलत्रिकोण राशी है। इस राशि का प्रतीक चिन्ह कन्या है जो यथार्थ और शंकालु प्रवृत्ति का परिचायक है।

- **तुला** - यह राशी चक्र की सातवीं राशी है। यह वायुतत्व , तमोगुणी और चर स्वभाव राशी है। इसकी दिशा पश्चिम है। शुक्र इस राशी का स्वामी है। तुला शुक्र की मूलत्रिकोण राशी है। इस राशी का प्रतीक चिन्ह तराज़ू है जो की सत्य व्यवहार और संतुलन का परिचायक है।
- **वृश्चिक** - यह राशी चक्र की आठवीं राशी है।यह जलतत्व , रजोगुणी और स्थिर स्वभाव राशी है।इसकी दिशा उत्तर है। मंगल इस राशी का स्वामी है। इस राशि का प्रतीक चिन्ह बिच्छू स्वार्थ और रहस्य का परिचायक है।
- **धनु** - यह राशी चक्र की नौवीं राशी है यह अग्नितत्व , सत्वगुण और द्विस्वभाव राशी है।इसकी दिशा पूर्व है। बृहस्पति इस राशी का स्वामी है। धनु बृहस्पति की मूलत्रिकोण राशी है। इस राशि का प्रतीक चिन्ह धनुर्धर शिकारी जो की आधा मानव आधा पशु है। लक्ष्य संधान और संधि सीमा का प्रतीक है।
- **मकर** - यह राशी चक्र की दसवीं राशी है। यह पृथ्वीतत्व , तमोगुणी और चर स्वभाव राशी है। इसकी दिशा दक्षिण है। शनि इस राशी का स्वामी है। इस राशी का प्रतीक चिन्ह मकर है। मकर श्रम और परिवर्तन का परिचायक है।

- **कुम्भ** - कुम्भ राशी चक्र की ग्यारहवीं राशी है। यह वायुतत्व , रजोगुणी और स्थिर स्वभाव राशी है. इसकी दिशा पश्चिम है। शनि कुम्भ राशी का स्वामी है।कुम्भ शनि की मूलत्रिकोण राशी है। इस राशी का प्रतीक चिन्ह जलकुम्भ है जो ज्ञान और मौलिकता का परिचायक है।
- **मीन** - यह राशी चक्र की बारहवीं राशी है। यह जलतत्व , सत्वगुणी और द्विस्वभाव राशी है। की दिशा उत्तर है। बृहस्पति मीन राशी के स्वामी हैं। इस राशी का प्रतीक चिन्ह युगल मीन है। जो कृपा करुणा और भगवत्ता की परिचायक है।

भाव कारकत्व*

- **प्रथम-** जन्म समय की बाते,शरीर , वर्ण , शरीर का रंग और सम्पूर्ण स्वरुप ,कद, व्यक्तित्व , सामान्य समृद्धि , बाल्यवस्था , प्रारंभिक जीवन , स्वास्थ्य , चरित्र , आयु , जन्मस्थान , मान म्मान , स्वभाव , सुख दुःख , ज्ञान , क्षमता , स्वप्न , बल , लालसा और वैराग्य , निज (सेल्फ)और निजता , आत्मबोध. कालपुरुष की प्रथम राशि मेष है, कुंडली के प्रथम भाव में विराजती है. जिसका स्वामी मंगल जातक के वर्तमान व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है. प्रथम भाव का नैसर्गिक कारक सूर्य है।

द्वितीय भाव कारकत्व

- मुख,कुटुंब , दाईं आंख , भोजन , धन संपत्ति , संचित धन , वाणी ,विद्या, आस्तिकता , नाखून , जिह्वा , रत्न , धूप दीप , नासिका , मानसिक स्थिरता , परमार्थ , आय की विधि,माता का बड़ा भाई,कुमार अवस्था। कालपुरुष की दूसरी राशि वृषभ है। इस भाव मे बिराजमान है।

तृतीय भाव कारकत्व

- छोटे भाई बहन , पराक्रम , साहस , शौर्य , सगे संबंधी , गला , वाकशक्ति , कान , कँधे,बाजू साँसनली,मित्र,वायुयान यात्रा,कम दूरी की यात्रा,यौवन अवस्था,वीरता,नवम से सप्तम होने के कारण पिता की मृत्यु , श्रम , मित्र , छोटी यात्रायें , शौक , दूसरों को कष्ट पहुंचाना. कालपुरुष की तृतीय राशि मिथुन है। इस भाव में स्थान पाती है।

चतुर्थ भाव कारकत्व

- माता , मन,भवन , मकान , भू संपत्ति , पैतृक संपत्ति , विद्या , वाहन , खुशहाली , मानसिक शांति , सुख , छाती , श्वसन अंग - फेफड़े, रक्क्त,सुख सुविधायें ,सुख दुख,उन्नति, गुप्त धन ,राजनीतिक सफलता , जनता,जाति , कपड़ा , छोटा कुआं , जल , दूध , सुगंध , विश्वास , झूठा आरोप , जय , खेत , बाग़ , जनता के हित के कार्य चोरी गई वस्तु की दिशा , महंगे वाहन , जल में उत्पन्न पदार्थ। कालपुरुष की चतुर्थ राशि कर्क है। इस भाव में स्थान पाती है।

पंचम भाव कारकत्व

❖ विद्या , सीखना , बौद्धिक क्षमता ,बुद्धि, ज्ञान , मौलिकता , पूर्वपुण्य ज्योतिष प्रेम , मंत्र , संतान ,गर्भ, दादा , बड़ी बहन का पति,उच्च स्तर से पतन , शासक , लेखन , उपासना , आराधना , साहित्य निपुणता , प्रेम सम्बन्ध , लॉटरी , अचानक धन प्राप्ति , विवेक , पूर्वाभास , उच्च पदस्थ स्त्रियों से सम्बन्ध , दृढ़ता , रहस्य ,नोरंजन और राग रंग , पेट , लंगर या भंडारा कराना , पाप पुण्य की समझ , मन्त्र जाप और मन्त्र सिद्धि , ढोल , संगीत वाद्य , संतोष और तृप्ति का भाव , पांडित्य , परम्परा से प्राप्त उच्च पद. जीवन की सच्ची ख़ुशी इसी भाव से देखी जाती है। कालपुरुष की पांचवी राशि सिंह है। इस भाव में स्थान पाती है।

षष्टम भाव कारकत्व

❖ रोग , शत्रु , ऋण , नोकरी,दासत्व,सेवा,चोट और घाव व्यसन,अंतड़ियाँ, परायापन,हिंसा, मुकद्दमेबाजी दुःख और चिंतायें , अवरोध और अड़चने , शत्रु द्वारा सताया जाना , मामा और ममेरे भाई बहन , सेना , खेलकूद , स्पर्धा , संघर्ष , दुर्घटना , नौकर और सेवक , दुर्गति , दुर्भाग्य , चरित्रहनन , अपमान , फोड़ा फुंसी और सूजन , उग्र कर्म , श्रम , मानसिक व्यथा , भीख मांगना , कला का दुरूपयोग , भाई बंधुओं से झंझट , विष , पेट का दर्द , कारावास ,

मूत्ररोग , सार्वजनिक निंदा और अपमान , चोरी , विपत्ति। कालपुरुष की छठी राशि कन्या है। इस भाव में स्थान पाती है।

सप्तम भाव कारकत्व

❖विवाह , पत्नी , वैवाहिक ख़ुशी , व्यापारिक साझेदारी , विदेश क्योंकि यह लग्न से अति दूर भाव है पेट का निचला भाग , गुप्तांग , पथ राजनैतिक पहुंच , विकास , प्रतिभा , मृत्यु , व्यभिचार , सेक्स पॉवर वीर्य , सेक्स संबंधी क्रियाकलाप , नपुसंकता,जीवनसाथी , ताकत की चीजें खाना , घर से दूर के स्थान। कालपुरुष की सातवीं राशि तुला है। इस भाव में स्थान पाती है।

अष्टम भाव कारकत्व*

❖आयु , दुर्भाग्य , सदा ऋण में फंसे रहना , पाप कर्म , षड्यंत्र , अभियोग , सार्वजनिक निंदा , अचानक अथवा अकाल मृत्यु , पिछले जन्म में किये पापकर्मों से दुर्भाग्य , गुप्त शत्रु , संकट , पत्नी का धन , ससुराल,पैतृक संपत्ति का मिलना , अलौकिक विषयों में रूचि , यौनानन्द , समाधी बीमे का धन , राज्य द्वारा प्रदत्त दंड , वस्तुओं का नाश , महान दुखों और कष्टों की प्राप्ति , अंगहीन होना , पाताल और भूमि के नीचे के अखाद्य तरल. मृत्यु से जुड़े व्यवसाय,खतरे वाले कार्य,समुद्र,नाश,आयु,अंडकोष। कालपुरुष की आठवीं राशि वृश्चिक है।इस भाव में स्थान पाती है।

नवम भाव कारकत्व

❖ धर्म , पिता , गुरु , भाग्य , लंबी यात्रायें , आत्मिक समृद्धि , सदाचार , अध्यापक , शिक्षक , पौत्र , अंतर्ज्ञान , भविष्य को भांप लेना , देवभक्ति , पूजा स्थान , दानशीलता , नेतृत्व , अध्यात्म , कानून , दर्शनशास्त्र , विज्ञान , साहित्य , कल्पनाशीलता , उच्च शिक्षा , तीर्थ यात्रा , तप , भक्ति , औषधि , पवित्रता , सत्संग , दैवीय कृपा , पुण्य संपादन की क्षमता , अचानक शुभाशुभ घटनाएं,महान ऐश्वर्य , राज्य प्राप्ति , ब्रह्मज्ञान , दानशीलता , यज्ञ आदि करना , ईश्वरीय चिंतन,राज्यकृपा, राज्य के बड़े अधिकारी,नितंब।कालपुरुष की नॉवी राशि धनु है। इस भाव मे स्थान पाती है।

दशम भाव कारकत्व*

❖आजीविका और उसके साधन , पद , सत्ता , नेतृत्व , शासन,मान सम्मान ,राज्य, राज्यकृपा , प्रसिद्धि , जिम्मेदारी , सरकारी दायित्व और कार्य , शुभाशुभ कर्म,ऊंचाई,आसमान,समाज में प्रशंसनीय कार्य , उचित संभाषण , जांघ ,घुटने, सरकारी मुहर प्रयोग का अधिकार , प्रभाव , गोद लिया पुत्र ,सासु, छोटे भाई बहन की आयु, व्यापार वाणिज्य , जातक का बल (किसी भी भाव से दशम भाव उस भाव को बल देता है)। कालपुरुष की दसवीं राशि मकर है।इस भाव में स्थान पाती है।

एकादश भाव कारकत्व*

❖आय , लाभ , प्राप्ति , बड़े भाई बहन , पुत्रवधु,मित्र ,माता की आयु,चोट,चाचा, शुभ समाचार , बायां कान ,बाजू, बीमारी, आभूषण , इच्छापूर्ति , बहुत बड़ा सम्मान , निपुणता , ससुर से लाभ , सिद्धि , बिना कष्ट अथवा श्रम के लाभ , पाककला , आशा , चित्रकला में निपुणता , कुंडली को मूल्य देना (एकादश भाव चूंकि प्राप्ति भाव है तो इस भाव का अध्ययन जातक के पूरे जीवन का मूल्यांकन करता है)। कालपुरुष की ग्याहरवीं राशि कुम्भ है। एकादश भाव में विराजमान होती है।

द्वादश भाव कारकत्व*

❖पाँव,पृथकता,भोग विलास,गूढ़ विद्या में निपुणता , हानि और चोरी , अत्यधिक व्यय , व्यय , किस्तें भरना , दूसरे का सब कुछ छीन लेना , दूसरों की धन सम्पति हड़प जाना , शयन सुख , अस्पताल जेल , बाईं आंख , विदेश निवास , मोक्ष , पतन , अनिद्रा , स्त्रियों का चरित्र और कामुक हावभाव , मन की पीड़ा , दर्द से मुक्ति , ऋण से मुक्ति , जनता द्वारा शत्रुता , त्याग , दरिद्रता , शाहखर्ची अधिकार छिन जाना , दीनहीन होना। जलीय वस्तुएं,रक्षा विभाग,कारागार, धर्म,मंदिर,मोक्ष। कालपुरुष की बारहवीं राशि मीन है। इस भाव में बिराजमान होती है।

BY:- Shree Pavan Sharma